Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जमर आई नहीं, जाई ही करेगी : माड़वा की माँ चंदू का जमर

अशोक दान*

* शोधार्थी (इतिहास) ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – मरुधरा का इतिहास केवल युद्धों का ही नहीं, बल्कि स्वाभिमान और 'हठ' का भी रहा है। जब-जब सत्ताा के नशे में चूर शासकों ने अन्याय की सीमाएं लांघी, तब-तब चारणों ने 'तागा' (शरीर त्याग) और 'जमर' (जीवित अग्नि समाधि) जैसे कठोर निर्णय लेकर धर्म की रक्षा की। ऐसी ही एक ओजस्वी गाथा है माड़वा गाँव की 'चंदू माऊ' की, जिन्होंने पैतृक संपत्ति और मर्यादा के लिए वह किया जो इतिहास में बिरले ही कर पाए।[1]

प्रस्तावना – चंदू माऊ का जन्म उस कोख से हुआ था जो स्वयं त्याग की प्रतिमूर्ति थीं- माँ अणदू (जिन्होंने गुड़ी में नाई के लिए जमर किया था)। पिता थे माड़वा के ऊदाजी सिंढायच। चंदू बाई का विवाह दासोड़ी गाँव के रतनू रतनजी सूरदासोत के साथ हुआ था। कहते हैं न 'शुकळ दोहुं पख पीहर सासरो' यानी जिनका पीहर और ससुराल दोनों पक्ष उज्ज्वल थे।

विवाद की जड़: माड़वा की 'रोही' – घटना उस समय की है जब चंदू बाई अपने पीहर माड़वा आई हुई थीं। उन दिनों माड़वा की 'कांकड़' (सीमा) बहुत विस्तृत थी, जो पोकरण के पास स्थित खींवज माता मंदिर तक फैली थी। यहाँ की 'रोही' (खेत) बड़ी उपजाऊ थी और उसमें 'सेवज' गेहूं की बंपर पैदावार होती थी। पोकरण के ठाकुर सालमसिंह चांपावत, जो अपनी क्रूरता और कायरता के लिए बदनाम था, की नजर इस जमीन पर पड़ गई। स्वार्थी सलाहकारों ने उसे पट्टी पढ़ाई कि 'ऐसी उपजाऊ जमीन और अखेसर तालाब चारणों के पास नहीं, खालसा (राज्य) में होनी चाहिए'।[2]

सालमसिंह की हठधर्मिता – सालमसिंह ने माड़वा की जमीन जब्त करने का फरमान सुना दिया और कार्यवाही शुरू कर दी। चारणों ने बहुत समझाया, धरने दिए, 'पड़पच' (प्रयत्न) किए, लेकिन सत्ताा के मद में अंधे ठाकुर ने एक न सुनी। वह जमीन दबाते-दबाते अखेसर तालाब तक आ पहुँचा। अब चारणों के पास एक ही रास्ता बचा था- 'जमर'। यह अंतिम अस्त्र था। पंचायत बैठी। सवाल उठा कि जमर कौन करे? क्योंकि जमर करने से उस व्यक्ति का वंश या परिवार तो अमर हो जाता है, पर शरीर का मोह छोड़ना आसान नहीं। कोई भी 'आई' (बहू) इसके लिए आगे नहीं आई।

'जमर आई नहीं, जाई करेगी'[3]

पूरे गाँव में उदासी छाई थी। जब यह बात चंदू बाई को पता चली, तो उनका चारणी रक्त खौल उठा। वे भरी सभा में आईं और बोलीं- 'यह जमीन मेरे बाप-दादों की है। मेरे भाइयों पर संकट आया है। अगर कोई बहू (आई) हिम्मत नहीं कर पा रही, तो चिंता मत करो। यह जमर 'आई' नहीं, 'जाई' (बेटी) करेगी। मैं जमर करूँगी।' लोगों ने रोका-'भुआसा! आप तो बेटी हैं, आपका जमीन में हिस्सा (पांती) नहीं होता, आप क्यों प्राण देती हैं?' तब माँ चंदू ने जो जवाब दिया, वह इतिहास बन गया- 'अरे कालों (पगलों)! जमीन मेरे पीहर की जा रही है, तो दर्द भी मुझे ही होगा। इन बेचारी बहुओं को क्या दोष दूँ? तैयारी करो।'[4]

अबोट धोती और अग्नि स्नान – जमर का निर्णय पक्का हुआ। चंदू माऊ ने अपनी भौजाइयों और काकियों से 'अबोट ओढ़णा' (कोरा वस्त्र) मांगा, लेकिन डर के मारे किसी ने नहीं दिया। तब माँ ने अपनी संदूक से अपने पति की 'अबोट धोती' निकाली और उसे धारण किया। शायद उन्हें पहले ही आभास था, इसलिए वे उसे साथ लाई थीं। मिश्रोजी ढोली ने ढोल पर चोट दी। 'जय अंबे, जय देवल' के उद्घोष के साथ चंदू बाई माड़वा से अखेसर तालाब की ओर चल पड़ीं। कहते हैं उस समय उनके चेहरे का तेज सूरज जैसा था। जैसे ही वे जमर-स्थल पर बैठीं, अग्नि स्वत: प्रज्वलित हो उठी (पर्चा हुआ)।[5]

श्राप और वचन – अग्नि में बैठने के बाद माँ चंदू ने सालमसिंह को श्राप दिया- 'जा सालम ! मेरा बारहवां और तेरा तीसरा दिन एक साथ होगा। तेरा वंश आगे नहीं चलेगा, पीढ़ी-दर-पीढ़ी गोद ही लेनी पड़ेगी।'[6] (आज भी यह माना जाता है कि पोकरण ठिकाने में दत्तक पुत्र ही गद्दी पर बैठते रहे)। जब लपटें उठने लगीं, तो पास खड़े मिश्रोजी ढोली को आंच लगी। माँ ने हँसकर कहा- 'मिश्रा! डर मत। यह आग नहीं, गंगाजल है। तुझे आंच नहीं आएगी, बस तेरे वंशज थोड़े श्याम वर्ण (काले रंग) के होंगे, पर खूब फलेंगे-फूलेंगे।'[7]

सालमसिंह का अंत – यह बलिदान विक्रम संवत 1879, मार्गशीर्ष (मिंगसर) बदि चौथ, शनिवार को हुआ। उस समय चंदू बाई की उम्र मात्र 33 वर्ष थी। उधर जमर हुआ, इधर सालमसिंह के पेट में असह्य पीड़ा शुरू हो गई। वैद्यों ने कहा कि यह सती का कोप है। उपाय बताया गया कि जमर की भस्म (राख) को गयाजी में विसर्जित करो। एक मुसलमान को भेजा गया, पर वह रास्ता भटक कर वापस माड़वा आ गया और राख वहीं डाल दी। ठीक नौवें दिन, तड़प-तड़प कर सालमसिंह के प्राण निकल गए। जब उसका दाह संस्कार हुआ और राख ठंडी हुई, तो उसमें एक 'कटारी' मिली। लोक मान्यता है कि यह वही कटारी थी जो माँ चंदू के कोप के रूप में उसके पेट में चल रही थी।

साहित्यिक साक्ष्य (छंद और भावार्थ)

इस घटना का वर्णन करते हुए धूड़जी मोतीसर ने एक बहुत ही ओजस्वी छंद लिखा है:

मनधार मत्ती सज सगत्ती, आप रत्थी आविया।

पोक्रण पत्ती वड कुमत्ती, छोह छत्ती छाविया।
तन झाळ तत्ती सूर सत्ती, रूक हत्थी राइवै।
बढ चरण वंदू सील संधू, मात चंदू माइवै।।[8]

भावार्थ: माँ चंदू मन में दृढ़ निश्चय धारण कर, साक्षात शक्ति (सगत्ती) का रूप धरकर, अपने रथ (आत्मबल) पर सवार होकर आईं। पोकरण का स्वामी (सालमसिंह) जो बड़ी कुबुद्धि वाला था, उस पर उन्होंने अपना 'छोह' (क्रोध) प्रकट किया। सूर्य के समान तेजस्वी वह सती, जब शरीर पर अग्नि की ज्वाला (झाळ) लेकर बैठीं, तो ऐसा लगा मानो रणभूमि में हाथ में तलवार (रूक) लेकर लड़ने आई हों। माड़वा की उस शीलवान देवी माँ चंदू के चरणों में मैं वंदना करता हूँ।

बाद की घटना: सुलह की कोशिश – सालमसिंह की मौत के बाद उसके उत्तराधिकारी ने प्रायश्चित करने की कोशिश की। उसने माड़वा के चारणों को 'खीर-खांड' (भोज) के लिए बुलाया। चार प्रमुख चारण गए। लेकिन जैसे ही उन्होंने खीर का ग्रास (कोर) तोड़ा, एक भयानक बवंडर आया और थाल पलट गया। इसे देवी का संकेत मानकर वे डरे, लेकिन जिन्होंने अन्न खा लिया था, उनके घरों में बाद में बहुत 'दुफेड़' (कष्ट) पड़ी। माँ चंदू का प्रताप आज भी उस क्षेत्र में माना जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. गिरधर दान दासोड़ी से वार्ता।
2. गिरधर दान देथा कोडा से वार्ता।
3. चारण समाज में जमर परम्परा पर प्रकाशित शोधपत्र-गोपाल दान।
4. लोकदेवी देमा माता के जमर का ऐतिहासिक अध्ययन- मनोहर दान झनकली।
5. आत्मोत्सर्ग का आलोक- गिरधर दान दसोड़ी।
6. नाहर सिंह जसोल - चारणाँ री बाताँ।
7. भंवरसिंह सामोर -राजस्थानी शक्ति काव्य।
8. मोहन दान, शोधपत्र जमर-चारण जाति की स्त्रियों में प्रतिकार की परंपरा।

****